नव भारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

न्याय व्यवस्था में डिजिटल क्रांति का नया प्रयोग

मध्य प्रदेश हाई कोर्ट द्वारा शुरू किया गया 'यूनिफाइड डिजिटल जस्टिस मॉडल' भारतीय न्याय व्यवस्था के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जाएगा. पुलिस, अदालत, जेल, फॉरेंसिक और मेडिकल तंत्र को एक ही डिजिटल प्लेटफॉर्म पर जोड़ने का यह प्रयास केवल तकनीकी सुधार नहीं, बल्कि न्याय की प्रक्रिया को तेज, पारदर्शी और नागरिक-केंद्रित बनाने की दिशा में बड़ा कदम है. जिस देश में वर्षों तक अदालतों में फाइलों के ढेर, तारीख पर तारीख और आदेशों के क्रियान्वयन में देरी न्याय व्यवस्था की पहचान बन गई थी, वहां यह पहल एक नई उम्मीद जगाती है.

सबसे उल्लेखनीय बात यह है कि अब जमानत आदेश के बाद कैदी की रिहाई में घंटों या कई दिनों का इंतजार नहीं करना पड़ेगा. यदि वास्तव में आदेश जारी होने के दस मिनट के भीतर रिहाई संभव होती है, तो यह भारतीय न्याय प्रणाली में 'प्रक्रियागत देरी' के खिलाफ सबसे प्रभावी सुधारों में गिना जाएगा. कई बार ऐसा देखा गया है कि अदालत से जमानत मिलने के बावजूद तकनीकी और प्रशासनिक कारणों से आरोपी को अतिरिक्त समय जेल में बिताना पड़ता था. यह स्थिति संविधान द्वारा प्रदत्त व्यक्तिगत स्वतंत्रता की भावना के विपरीत थी. नई डिजिटल व्यवस्था इस विसंगति को काफी हद तक समाप्त कर सकती है. इसी प्रकार अदालतों के आदेशों और प्रमाणित प्रतियों का व्हॉट्सएप और ईमेल के माध्यम से उपलब्ध होना आम नागरिकों के लिए बड़ी राहत है. छोटे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों से आने वाले लोगों को अब केवल एक कॉपी लेने के लिए अदालतों के चक्कर नहीं काटने पड़ेंगे. यह न्याय तक पहुंच को आसान और सुलभ बनाने की दिशा में ठोस पहल है. डिजिटल समन और नोटिस की व्यवस्था से मुकदमों की सुनवाई में देरी कम होगी और अदालतों की कार्यक्षमता बढ़ेगी.

इस मॉडल का एक और महत्वपूर्ण पहलू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग है. बड़े मामलों की ऑटो-समरी तैयार होने से जजों और वकीलों का समय बचेगा तथा मामलों की सुनवाई में तेजी आएगी. भारत में करोड़ों लंबित मामलों के बीच तकनीक का यह उपयोग न्यायिक प्रक्रिया को अधिक सक्षम बना सकता है. साथ ही, फॉरेंसिक और मेडिकल रिपोर्ट्स का सीधे डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अपलोड होना सबूतों से छेड़छाड़ की संभावनाओं को भी कम करेगा.

हालांकि, इस डिजिटल क्रांति के साथ कुछ चुनौतियां भी जुड़ी हैं. साइबर सुरक्षा, डेटा गोपनीयता और डिजिटल साक्षरता सबसे बड़ी चिंता होंगी. यदि न्यायिक डेटा सुरक्षित नहीं रहा, तो इसका दुरुपयोग गंभीर परिणाम पैदा कर सकता है. इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट और तकनीकी संसाधनों की कमी भी इस व्यवस्था के प्रभावी क्रियान्वयन में बाधा बन सकती है. इसलिए तकनीक के साथ मजबूत सुरक्षा और प्रशिक्षण तंत्र भी विकसित करना होगा. दरअसल,मध्य प्रदेश हाई कोर्ट का यह मॉडल केवल एक राज्य की पहल नहीं, बल्कि भविष्य की न्याय व्यवस्था की झलक है. यदि यह प्रयोग सफल होता है, तो देश के अन्य राज्यों के लिए भी आदर्श बन सकता है. न्याय में देरी को लोकतंत्र की सबसे बड़ी कमजोरियों में माना जाता है. ऐसे में डिजिटल तकनीक के माध्यम से 'त्वरित और पारदर्शी न्याय' की दिशा में उठाया गया यह कदम वास्तव में स्वागत योग्य है.

बहुपक्षवाद का संकट

डब्लूटीओ में सुधार की अनिवार्यता

राजेश अग्रवाल

> भारत की व्यापक व्यापार रणनीति, बहुपक्षीय मंचों में भागीदारी को द्विपक्षीय और क्षेत्रीय समझौतों के साथ जोड़ती है. जैसे-जैसे व्यापार नीति जटिल होती जा रही है जिसमें नियामक मानक, डिजिटल शासन और आपूर्ति श्रृंखला का एकीकरण शामिल है समान विचारधारा वाले भागीदारों के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) मजबूत आर्थिक एकीकरण के महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में उभरे हैं. हालांकि, वर्तमान में जारी चर्चाओं में भारत की रचनात्मक भागीदारी इस कार्य की तात्कालिकता और जटिलता, दोनों को प्रतिबिंबित करती है. संतुलित, समावेशी और भविष्य-केंद्रित सुधारों को समर्थन देकर, भारत यह सुनिश्चित करने का प्रयास करता है कि डब्लूटीओ तेजी से बदलती दुनिया में प्रासंगिक बना रहे एक ऐसा संस्थान, जो न केवल व्यापार को प्रबंधित करने में सक्षम हो, बल्कि एक अधिक न्यायसंगत वैश्विक आर्थिक भविष्य को आकार देने की भी क्षमता रखता हो। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि डब्लूटीओ व्यवसायों को निश्चितता, पूर्वानुमेयता, समावेशिता, समानता और सरलता प्रदान करता है, यानी नियम-आधारित व्यापार व्यवस्था.

बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली औचित्य के गहरे संकट का सामना कर रही है. बीसवीं सदी के उत्तरार्ध और इक्कीसवीं सदी की शुरुआत में, विश्व व्यापार संगठन (डब्लूटीओ) वैश्विक व्यापार का केंद्रीय स्तंभ था, जो नियम-आधारित व्यवस्था की पेशकश करने के साथ तटस्थता, पूर्वानुमेयता और निष्पक्षता का वादा करता था. हालांकि आज, ये वादे काफी कमजोर प्रतीत होते हैं. डब्लूटीओ में विश्वास की कमी, किसी एक विफलता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह संरचनात्मक असंतुलन, असमान प्रवर्तन और वैश्विक आर्थिक शक्ति के बदलते स्वरूप के संचयी प्रभाव को प्रतिबिंबित करती है.

इस संकट के मूल में है - वैश्विक उत्पादन का अत्यधिक केंद्रीकरण और आक्रामक व्यापार प्रथाओं की निरंतरता. समय के साथ, आपूर्ति श्रृंखलाएँ परस्पर अत्यधिक निर्भर हो गई हैं और उनका वितरण भी असमान है, जहाँ कुछ प्रमुख अर्थव्यवस्थाएँ महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर अनुपात से कई गुनी ज्यादा नियंत्रण रखती हैं. हालांकि, इस केंद्रीकरण ने कुछ मामलों में वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं को अधिक कुशल बना दिया है, लेकिन इसने उन्हें काफी हद तक कमजोर भी बना दिया। व्यवधान—चाहे भू-राजनीतिक हो, आर्थिक हो, या पर्यावरण-संबंधी हों—अब प्रणालीगत नतीजे लेकर आते हैं. परिणामस्वरूप, आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरी अब केवल एक आर्थिक चिंता के रूप में नहीं देखी जाती; इसे अब राष्ट्रीय सुरक्षा और आर्थिक अस्तित्व के मामले के तौर पर देखा जाने लगा है.

धारणा में हुए बदलाव ने नीतिगत प्रतिक्रियाओं की एक ऐसी लहर को जन्म दिया है, जो बहुपक्षवाद के मौलिक सिद्धांतों को चुनौती देती हैं. देश घरेलू हितों की रक्षा के लिए संरक्षण उपायों, आक्रामक औद्योगिक नीतियों और निर्यात नियंत्रण को अपना रहे हैं. हालांकि ऐसी रणनीतियाँ अल्पकालिक सहनशीलता ला सकती हैं, लेकिन वे डब्लूटीओ की सहयोग भावना और कानूनी रूपरेखा को अक्सर कमजोर कर देती हैं. तकनीकी अवरोध, महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखलाओं पर नियंत्रण और भू-राजनीतिक प्रभाव के उपकरण के रूप में बाज़ार पहुंच का बढ़ता उपयोग एक व्यापक परिवर्तन का संकेत देता है: व्यापार अब केवल आर्थिक लेन-देन ही नहीं, बल्कि रणनीतिक शक्ति के बारे में है. डब्लूटीओ सदस्यों के बीच एक व्यापक रूप से मान्य दृष्टिकोण यह है कि संगठन प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं को उनके प्रतिबद्धताओं के प्रति जवाबदेह ठहराने में अक्षम रहा है और इसने वर्तमान स्थिति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. जब नियम असमान रूप से लागू किए जाते हैं या प्रवर्तन तंत्र विफल हो जाते हैं, तो प्रणाली में विश्वास कमजोर हो जाता है. कई देशों में, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण के देशों में, यह धारणा मजबूत हुई है कि डब्लूटीओ अब एक निष्पक्ष मध्यस्थ के रूप में कार्य नहीं करता. इसके बजाय, इसे एक ऐसे संस्थान के रूप में देखा जाता है, जो तेजी से बदलती वैश्विक अर्थव्यवस्था की वास्तविकताओं के प्रति अनुकूल होने के लिए संघर्ष कर रहा है.

इस संदर्भ में, सुधार प्रयासों का केंद्रीय उद्देश्य डब्लूटीओ की विश्वसनीयता को बहाल करना हो गया है. यद्यपि डब्लूटीओ सुधार की आवश्यकता पर सदस्यों के बीच व्यापक सहमति है, फिर भी इसे हासिल करने के तरीके पर सहमति न के बराबर है. सुधार की संरचना और विषय वस्तु पर बहसें लगातार विवादास्पद होती जा रही हैं. याओंडे के मंत्रिस्तरीय सम्मेलन में, सदस्यों ने डब्लूटीओ के मूलभूत सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धता की पुनः पुष्टि की, जिनमें निष्पक्षता, पारदर्शिता, समावेश और सहमति-आधारित निर्णय शामिल हैं. इन सिद्धांतों ने लंबे समय से डब्लूटीओ को अन्य अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं से अलग बनाये रखा है, यह सुनिश्चित करते हुए कि सभी सदस्य, चाहे उनका आकार या उनकी आर्थिक शक्ति कुछ भी हो, वैश्विक व्यापार नियमों को अंतिम रूप देने में अपनी बात रख सकें.

हालांकि, इन सिद्धांतों के व्यावहारिक अनुप्रयोग को, विशेष रूप से बहुपक्षीय समझौतों से जुड़ी चर्चाओं में, समस्याओं का सामना करना पड़ा है. ये समझौते डब्लूटीओ सदस्यों के उपसमूहों के बीच बातचीत के बाद तैयार किए गए हैं.

लेखक वाणिज्य विभाग के सचिव हैं

विंध्य की डायरी

जो मैदान में खुद चुनाव हारे वह कैसे करेंगे बेड़ा पार

डॉ. रवि तिवारी

कांग्रेस पार्टी ने आगामी निकाय एवं विधानसभा चुनाव को लेकर अभी से कमर कस ली है और संगठनात्मक ढांचे को मैदानी स्तर पर मजबूत करने के लिये नये-नये प्रयोग कर रही है. व्यक्तिवाद और गुटबाजी में उलझी कांग्रेस को मैदानी स्तर पर मजबूत बनाने के लिये विधानसभा प्रभारियों की नियुक्ति की गई है जो संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा कर बूथ स्तर पर संगठन को खड़ा करेंगे. कई ऐसे प्रभारी हैं जो खुद तो मैदान में चुनाव नहीं जीत पाए, अध्यक्ष रहते हुए भी संगठन को मजबूत नहीं कर पाये और अब पार्टी का बेड़ा पार कैसे करेंगे? खुद गुटबाजी में उलझे हुए प्रभारी कार्यकर्ताओं का क्या मार्गदर्शन करेंगे?

छत्रपों के इर्दगिर्द कार्यकर्ताओं की राजनीति होती है और मैदान में संगठन को मजबूत बनाने के लिये निष्ठाभाव से काम करने वाले नेताओं की कमी कांग्रेस में है. यह कोई पहला प्रयोग नहीं है इसके पहले भी विधानसभा स्तर पर प्रभारी संगठन की नब्ज टटोलते रहे हैं और एकता-अनुशासन का पाठ भी पढ़ाया पर नतीजा सबके सामने है. प्रभारी ने ब्लाकों में पहुंचकर बैठके लीं, जहां गुटबाजी साफ तौर पर देखने को मिली. सुझाव सामने आए तो समस्याएं भी रखी गईं और प्रभारियों ने अपने स्तर पर सुझाव और समस्याओं को ऊपर तक पहुंचाने का आश्वासन भी दिया पर नतीजा सभी को पता है. जब तक बूथ स्तर पर संगठन नहीं खड़ा होगा तब तक कांग्रेस की नैय्या हिलकोरे लेती रहेगी.

किसी ने पकड़ा ई-रिक्शा तो कोई चला बस से

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा पेट्रोल-डीजल की बचत को लेकर की गई अपील के बाद राजनीतिक गलियारे में बहस छिड़ गई है. आम जनता के साथ-साथ नेताओं द्वारा भी ईंधन बचाने की वकालत की जा रही है. विंध्य में इसका अनुपालन देखने को भी मिला. उदाहरण के तौर पर विंध्य के कई माननीय सांसद-विधायक ई-रिक्शा और सार्वजनिक बस में सफर करते नजर आए तो वही दूसरी तरफ कई नेताओं की गाड़ियों के पीछे काफिला भी चलता नजर आया. पीएम मोदी की अपील का असर मैदानी स्तर पर सार्थक नजर नहीं आ रहा. दिखावे के लिये सांसद-विधायक ई-रिक्शा, बसों में तो सफर कर फोटो खिंचवा रहे हैं पर वास्तविकता इससे अलग है. कई नेताओं ने साइकल पर सफर कर फोटो खिंचवाई और सोशल मीडिया में पोस्ट कर दी. ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत बनाने पीएम मोदी की अपील कहीं मजाक बनकर न रह जाय. भाजपा के नेता खुद लग्जरी वाहनो से सफर करते नजर आ रहे हैं. नेताओं के पीछे कार्यकर्ताओ की गाड़ियां फर्राटे मारते हुए चल रही हैं. अब सवाल यह उठता है कि बचत कहां है. कई माह पूर्व रीवा कमिश्नर बी.एस जामोद ने पर्यावरण संरक्षण को लेकर सुमंगल साइकिल अभियान शुरू किया था. तब से वह संभागीय अधिकारियों के साथ हर मंगलवार को साइकिल से ही कार्यालय पहुंचते हैं. लेकिन अन्य जिलों में यह अभियान दम तोड़ चुका है.

भरोसे का प्रतीक बनी जनसुनवाई

जनता की समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिये हर मंगलवार को जनसुनवाई कलेक्टर कार्यालय से लेकर सभी कार्यालयों में होती है. जनसुनवाई प्रशासनिक औपचारिकता बनकर दम तोड़ चुकी है, आवेदन देने के बाद केवल तारीख पर तारीख मिलती है निराकरण नहीं होता पर रीवा में नवागत कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के पदभार सम्भालने के साथ उनकी कार्यशैली पर जनता ने अटूट विश्वास जताया. यही वजह है कि जनसुनवाई भरोसे का प्रतीक बनती जा रही है. मंगलवार को कलेक्ट्रेट में जनसुनवाई में जन सैलाब उमड़ पड़ा. शायद इतनी भीड़ किसी नेता के आने पर भी नही होती. कहीं न कहीं यह कलेक्टर के प्रति जनता का विश्वास है. आवेदन के साथ मौके पर निराकरण करने वाले कलेक्टर विश्वास का प्रतीक बन चुके है. इसके साथ ही दूसरा पहलु यह है कि निचले स्तर पर निराकरण न होने के कारण जनता अपेक्षा लेकर कई किलो मीटर सफर तय कर कलेक्टर की चौखट पहुंचती है. मतलब साफ है कि नीचे के अधिकारी समस्याओं को लेकर संवेदनशील नहीं है.

कैसे लागू होगा 'जी राम जी' कानून

समूचे देश के ग्रामीण क्षेत्रों में आगामी 1 जुलाई से विकसित भारत रोजगार गारंटी व उपजीविका निगम (ग्रामीण) अधिनियम लागू कर दिया जाएगा) उसी दिन से महात्मा गांधी ग्रामीण रोजगार योजना कानून (मनरेगा) रद्द हो जाएगा. नई योजना में ग्रामीण परिवारों के जो वयस्क सदस्य स्वेच्छा से अकुशल शारीरिक परिश्रम करने को तैयार हैं, उन्हें प्रत्येक आर्थिक वर्ष में 125 दिनों के वेतन की रोजगार गारंटी दी जाएगी. इच्छुक लोगों को ग्रामपंचायत में आवेदन देने के बाद 15 दिनों में काम दिया जाना बंधनकारक रहेगा. ऐसा नहीं होने पर उन्हें बेरोजगारी भत्ता दिया जाएगा. मजदूरी के पैसे समय पर और पारदर्शक पद्धति से दिए जाएंगे. बैंक खाते या डाकघर के खाते में प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण (डीबीटी) के जरिए रकम जमा कर दी जाएगी. मजदूरी साप्ताहिक आधार पर या मस्टर रोल बंद हो जाने पर 15 दिनों के भीतर दी जाएगी. ऐसा करना अनिवार्य है. यदि भुगतान नहीं हुआ तो श्रमिकों को कानून के अनुसार नुकसान भरपाई पाने का हक रहेगा. सरकार ने जीरामजी कानून को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए वित्तवर्ष 2026-27 के लिए 95,692.31 करोड रुपए का आर्थिक प्रावधान किया है. किसी ग्रामीण रोजगार कार्यक्रम के लिए यह अब तक जारी की गई सर्वाधिक रकम है. जीरामजी योजना लागू होने पर भी मनरेगा के जो पुराने काम अभी चल रहे हैं, वह जारी रहेंगे. 30 जून तक ऐसे जो काम जारी रहेंगे उनको नई योजना में सुसंगत किया जाएगा. ग्रामीण श्रमिकों को तत्परता से काम उपलब्ध कराने तथा उसका पारिश्रमिक तत्काल देने को केंद्र सरकार प्रमुखता देगी. इसके पहले देश में कांग्रेस नेतृत्व की यूपीए सरकार ने मनरेगा योजना शुरू की थी जिस पर लगभग 2,13,220 करोड़ रुपए खर्च किए गए थे. बीजेपी सरकार ने अपने कार्यकाल में इस योजना पर 8,53,810 करोड़ रुपए खर्च किए थे. केंद्र सरकार का दावा है कि इस योजना को अधिक मजबूत व सक्षम बनाने के लिए जी राम जी कानून लाया गया है. मनरेगा में 100 दिन रोजगार का प्रावधान था जब कि जी राम जी में 125 दिन रोजगार दिया जाएगा.

VB-GRAM G Act — Viksit Bharat 2047

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

बेबुनियाद रिश्ते दे जाते शॉक, नादान दोस्त ज्यादा खतरनाक

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, दोस्ती हमेशा सोच-समझकर करनी चाहिए क्योंकि चालाक दुश्मन की तुलना में नादान दोस्त ज्यादा खतरनाक होता है. ऐसा दोस्त कहां ले जाकर डुबोएगा, इसका कोई ठिकाना नहीं है. अमेरिका ने पाकिस्तान पर भरोसा किया लेकिन उसने अपने नूरखान एयरबेस में ईरानी एयरफोर्स के विमानों को छुपाने में मदद की. पहले भी पाकिस्तान ने अपनी अबोटाबाद सैनिक छावनी के निकट 9/11 के आतंकी ओसामा बिन लादेन को छुपाकर रखा था जिसे अमेरिका के सील कमांडों ने एक साहसी मिशन के तहत मार गिराया था. पाकिस्तान अमेरिका को बार-बार दगा देता है लेकिन फिर भी वह अमेरिका को प्रिय है. पाकिस्तान के हर गुनाह को अमेरिका नजरअंदाज कर देता है. ट्रंप पाक सेना प्रमुख मुनीर को ग्रेट फील्ड मार्शल कहते हैं.'

हमने कहा, 'दोस्ती में कोई शर्त नहीं होती. दुर्योधन में लाख अवगुण थे लेकिन कर्ण ने उसे अपना घनिष्ठ मित्र बनाकर अंत तक साथ दिया था. वजह यह थी कि द्रौपदी के स्वयंवर में कर्ण को सूतपुत्र कहकर अपमानित किया गया था तो दुर्योधन ने तुरंत कर्ण को अंगप्रदेश का राजा घोषित कर दिया था. इसके साथ ही दोनों की दोस्ती पक्की हो गई थी.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आपने गीत सुना होगा- मेरी दोस्ती तेरा प्यार! फिल्म 'शोले' में अमिताभ बच्चन और धर्मेंद्र को गाते दिखाया गया था ये दोस्ती हम नहीं छोड़ेंगे. फिल्म जंजीर का गीत है- यारी है ईमान मेरा यार मेरी जिंदगी! दोस्ती में अमीरी-गरीबी नहीं देखी जाती. कृष्ण-सुदामा की मित्रता प्रसिद्ध है.'

हमने कहा, 'आज के जमाने में मतलब के यार ज्यादा मिलते हैं. कहा जाता है- यार-दोस्त किसके, माल खाए खिसके ! किसी भरोसे के दोस्त को पार्टनर बनाकर बिजनेस करो तो वह भी दगा दे जाता है. मतलब निकल जाने के बाद कोई किसी को पहचानता नहीं. यह मौकापरस्ती वाली फ्रेंडशिप होती है जो सीमित उद्देश्यों के लिए हुआ करती है. ट्रंप को ही देखिए! वह बार-बार कहते हैं- 'माय फ्रेंड मोदी' और फिर भी भारत पर भारी टैरिफ लगाते हैं. जब किसी मित्र से संबंध बिगड़ जाए तो कहना पड़ता है- दोस्त-दोस्त ना रहा, प्यार-प्यार ना रहा, जिंदगी हमें तेरा ऐतबार ना रहा !'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12260

- डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3		■	4	
	■	5		■	6		■
7	8		■	9			10
11		■	12	■		■	
■	13	14		15	■	16	
17	■		■	18			
19	20		21		■		■
22		■		■	23		

बाएं से दाएं
1.अन्वेषण, खोज (सं.) 4. चोरी करने के लिए दीवार तोड़कर बनाया हुआ छेद 5. धातु का तागा 6. मदार, अकबन 7. पल्ला, अंचल 9. बहन का संबंध 11. शतरंज का मोहरा जिसे ऊंट कहते हैं 13. नामजद, प्रसिद्ध 16. मिकदार, परिमाण 18. दूर करना, हटाना 19. फिल्म, नाटक आदि में दुष्ट पात्र की भूमिका करने वाला 22. डोरी, रज्जु 23. कांटा, विघ्न

ऊपर से नीचे
1. कंजूस, कृपण, अदाता, संकीर्ण-हृदय (सं.) 2. संतति, औलाद 3. किसी काटने वाले हथियार का तेज सिरा 4.आग या उसके सामने रखकर गर्मी पहुंचाना 6. घायल, दुखी, चोट खाया हुआ 8. किसी तरल पदार्थ को लकड़ी, रई आदि से बिलोना 10. चप्पल, पादुका 12. जिससे, इसलिए कि 14. साफ करना, परिमार्जित करना 15. थोड़ा, अल्प, जरा 16. लड़ाई-झगड़ा, हाथापाई, शारीरिक चोट पहुंचाना 17. तीक्ष्ण, पैना, धारदार 20. दही से बना पेय पदार्थ 21. अगर, जो

Solution 12259

नि	वा	प	■	ब	र	त	न
रा	स	ली	ला	■	■	र	■
डं	■	ता	प	■	आ	फ	त
ब	च्चा	■	ता	री	फ	■	ल
र	■	ब	■	ल	ता	■	ना
■	आ	ल	ता	■	ब	स	■
च	तु	रा	न	न	■	वा	मी
■	र	म	■	ग	फ	ल	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

11वर्ष के प्रारंभ में अत्याधिक परिश्रम केबाद आंशिक सफलता मिलेगी, मित्र के कारण विवाद होगा, मान प्रतिष्ठा के प्रति सचेत रहें, मन में खिन्नता रहेगी, वर्ष के मध्य में घरेलू कार्यो में रूचि रहेगी, बैचारिक वाद विवाद होगा, सत्संग में मन शांत रहेगा, वर्ष के अन्त में राजनैतिक मित्र का सहयोग रहेगा, व्यवसाय में वृद्धि होगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन से लाभ होगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को सत्ता का सुख रहेगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को सहयोग मिलेगा,सिंह राशि के व्यक्तियों को शिक्षा में रूचि रहेगी, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को अधिकारी के कोप का सामना करना पड़ेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियोंको नवीन योजनों में पूँजी निवेश होगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों का सहयोग और सुख शांति रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक रूपवान, सुन्दर, हृष्टपुष्ट, मिलनसार, एवं बचपन में जिद्दी, अधिक होगा. शिक्षा में देर से रूचि जागेगी. खेलों के प्रति रूचि रहेगी. कोई नया कार्य सीखेगा. पहिले नौकरी बाद में व्यवसाय करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

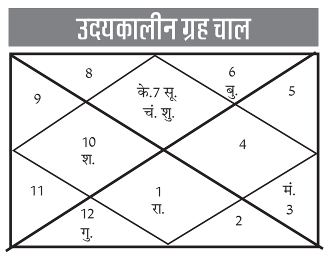

पंचांग

रा.मि. 28 संवत् 2083 अधिक ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया चन्द्रवासरे रात 8/47, रोहिणी नक्षत्रे दिन 2/11, सुकर्मा योगे रात 1/14, बालव करणे सू.उ. 5/22, सू.अ. 6/38, चन्द्रचार वृषभ रात 1/21 से मिथुन, पर्व-चन्द्रदर्शन, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक-4,6,0.

व्यापार भविष्य

अधिक ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया को रोहिणी नक्षत्र के प्रभाव से जीरा, धनियां, में घटाबढ़ी होगी, चना, जूट, पाट, बारदाना, देशी घी, तिल, सरसों, में मंदी की चाल चलेगी. वायदा मार्केट आज 11 बजकर 50 मिनिट के बने रूख पर व्यापार लाभदायक रहेगा. भाग्यांक 1539 है.

मेष- जीवनसाथी के व्यवहार से खिन्नता होगी, बिना मांगे सलाह न दें, मित्रों की मदद मिलेगी, कारोबारी यात्रा का योग सुखद रहेगा.

वृषभ- आप अपनी गलती मानने की बजाय दूसरों को दोष देंगे, जिससे संबंध बिगड़ सकते हैं, कार्य में इच्छानुसार सफलता मिलेगी, लाभ प्राप्त होने का योग है.

मिथुन- अधिकारियों के आदेश की अवहेलना न करें, धैर्य से काम लें, दूसरों के कामकाज में मदद मिलेगी. वाहन पर व्यय होगा. सतर्कता एवं सावधानी रखें.

कर्क- सकारात्मक सोच से उलझे मामले सुलझेंगे, मांगलिक कार्य में उपस्थिति रहेगी, संतान संबंधी कार्य होंगे, खरीदी में सावधानी रखें, यश मिलेगा.

सिंह- कोर्ट कचहरी के मामले पक्ष में हल होने की उम्मीद है, स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें, कामकाज में रूकावट आयेगी, किसी नजदीकी रिश्तेदारों में जाना पड़ेगा.

कन्या- सहकर्मियों के असहयोग से तनाव बढ़ सकता है, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कारोबार में इच्छानुसार सफलता मिलेगी. साहस संयम से कार्य करें.

तुला- मित्रों के साथ घूमने फिरने का कार्यक्रम बनेगा, बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, आपके कामकाज में सुधार होगा, पारिवारिक सहयोग मिलेगा.

वृश्चिक- मेहमानों के साथ व्यवस्था रहेगी, पूर्व में की गई मेहनत का लाभ मिलेगा, कामकाज में सफलता का योग है, नई योजना पर विचार विमर्श होगा.

धनु- अधिकारियों की अनदेखी से मुश्किल हो सकती है, रूका पैसा वसूल कर लेंगे, नौकरी में कोई काम जरूरी करना पड़ सकता है.

मकर- काम को समय पर पूरा कर लें, लाभ होगा, मामूली बात से करीबी रिश्तों में गलतफहमी होगी, नया खर्च सामने आ सकता है, कामकाज में वृद्धि होगी.

कुम्भ- विरोधियों से निपटने के लिये कूटनीति से काम लें, प्रियजन से मुलाकात होगी, स्वयं की गलती से कहीं कोई नुकसान हो सकता है, परिश्रम अधिक करना पड़ेगा.

मीन- भावनाओं पर काबू रखें, व्यापार व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी, मनोबल बना रहेगा, किसी व्यक्ति की सलाह उपयोगी सिद्ध होगी.

SUDOKU 7392

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7391

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7